हिंदी तथा बैंकिंग एवं आर्थिक परिदृश्य

डा. जयन्ती प्रसाद नौटियाल

हिंदी तथा बैंकिंग एवं आर्थिक परिदृश्य

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल

एम.ए. हिंदी (स्वर्णपदक प्राप्त), पीएच.डी. (तुलनात्मक भाषा विज्ञान),
एम.ए. (अंग्रेजी), एल.एल.बी., सी.ए.आई.आई.बी., डी.बी.एम (आई.आई.बी),
डिप्लोमा (अनुवाद), साहित्यरत्न, आई.जी.डी (कला डिलोमा)
प्रवीणता डिप्लोमा (उर्दू), एम.बी.ए. (बैंकिंग एवं वित्त)
सहित 32 अन्य प्रशिक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त
मुख्य प्रबंधक एवं प्रभारी (रा.भा.प्र.)
कार्पोरेशन बैंक, प्र.का. मंगलूर - 575 001

निवेदन

हिंदी तथा बैंकिंग एवं अर्थ जगत पर पुस्तक लिखने की इच्छा काफी समय से मन में थी । इसके कई कारण हैं । इन कारणों में सबसे प्रमुख कारण यह है कि बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं के कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण तो आरंभ कर दिए गए हैं, परन्तु मूल रूप से हिंदी में बैंकिंग व्यवसाय से संबंधित आधुनिक विषयों पर सामग्री उपलब्ध नहीं है। यह पुस्तक इस कमी को पूरा करेगी। अतः प्रशिक्षण संस्थान इस पुस्तक में उपलब्ध सामग्री का मूल रूप से हिंदी में तैयार हैंडआउटों के तौर पर कर सकते हैं ।

दूसरा प्रमुख कारण यह है कि अनेक विश्वविद्यालयों में डिग्री व पी.जी. स्तर पर व्यावसायिक हिंदी अथवा वाणिज्यिक हिंदी को पाठ्यक्रमों में रखा गया है परन्तु इससे संबंधित प्रामाणिक सामग्री का अभाव है । अतः विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में इस कमी को पाटने का कार्य भी यह पुस्तक करेगी तथा विद्यार्थियों को, बैंकिंग, अर्थजगत एवं हिंदी के बारे में पूरी जानकारी प्रदान करेगी ।

इस पुस्तक को लिखने का तीसरा उद्देश्य यह है कि बैंक तथा अनेक सरकारी संगठन, हिंदी दिवस, हिंदी माह के दौरान अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों को तैयारी करने हेतु पाठ्य सामग्री नहीं मिलती है, यह पुस्तक इस अभाव की पूर्ति भी करेगी । इस पुस्तक में मेरे कुछ पूर्व प्रकाशित लेख भी शामिल किए गए हैं । इन सभी लेखों/आलेखों को स्वतंत्र इकाई के रूप में माना जा सकता है । अतः इस पुस्तक में क्रमिकता नहीं रखी गई है । भाषा, बैंकिंग व आर्थिक लेख इसमें रखे गए हैं ताकि पाठकों को एकरसता या ऊब महसूस न हो ।

सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे इसमें सुधार हेतु अपने सुझाव भेजें, यदि कोई त्रुटियाँ रह गई हों तो उनके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ ।

मैं अपने बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.चेरियन वर्गीज, हमारे कार्यपालक निदेशक श्री पी. के. गुप्ता, महा प्रबंधक (राजभाषा) श्री ए. मोहन राव, तथा स.म.प्र. कर्नल रा. प्र. गोपालन के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जो सदैव मुझे प्रोत्साहित करते रहे हैं। इस पुस्तक लेखन में अपने परिवार तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिनका भी सहयोग प्राप्त हुआ है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

मंगलूर (कर्नाटक)
16-1-2004

(डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल)

लेखक परिचय

जन्म : 3 मार्च, 1956, देहरादून, उत्तरांचल राज्य

शिक्षा : एम.ए. हिंदी (स्वर्णपदक प्राप्त), पी.एच.डी., (तुलनात्मक भाषा विज्ञान), एम.ए. (अंग्रेजी), एल.एल.बी., सी.ए.आई.आई.बी., डी.बी.एम. (आई.आई.बी.), डिप्लोमा (अनुवाद), साहित्यरत्न, आई.जी.डी., (कला डिप्लोमा), उर्दू में प्रवीणता डिप्लोमा, एम.बी.ए. (बैंकिंग एवं वित्त), सहित 32 अन्य प्रशिक्षण प्रमाण पत्र/डिप्लोमा प्राप्त । संप्रति : ए.सी.एस. (एसोशिएट ऑफ कंपनी सैक्रेट्रीज ऑफ इंडिया) पाठ्यक्रम में अध्ययनरत।

सेवा : पत्रकारिता, सम्पादन, अध्ययन, चित्रकार, रीडर, जन सम्पर्क, शाखा परिचालन, एसोशिएट फैकल्टी के रूप में विभिन्न पदों पर भारत सरकार एवं कार्पोरेशन बैंक में सेवाएँ दी। संप्रति मुख्य प्रबंधक के रूप में राजभाषा प्रभाग, कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय, पांडेश्वर, मंगलूर - 575 001 में कार्यरत।

लेखन : 20 पुस्तकें लिखी 16 प्रकाशित
26 पुस्तकें संयुक्त रूप से अनूदित
1000 (एक हज़ार) लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित
10 से अधिक पत्रिकाओं के अनेक अंकों का सम्पादन

पुरस्कार : 3 अन्तर्राष्ट्रीय, 18 राष्ट्रीय व 12 राजस्तरीय पुरस्कार प्राप्त (कुल 33 पुरस्कार)

अन्य :

1. भारतीय बैंकर संस्थान की एसोशिएट परीक्षा के परीक्षक
2. बैंकिंग कार्मिक चयन संस्थान मुंबई के मुख्य परीक्षा प्रशासक
3. समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान
4. भारतीय बैंक संघ, भारतीय बैंकर संस्थान, राष्ट्रीय बैंक प्रबंध संस्थान जैसी शीर्ष संस्थाओं की विभिन्न हिंदी की समितियों में सदस्य। तथा कई उच्चस्तरीय समितियों में सदस्य सचिव के रूप में सेवाएं दे रहे हैं।
5. राजभाषा, साहित्य, प्रबंधन, मानव संसाधन एवं विविध विषयों पर अतिथि वक्ता के रूप में हज़ारों व्याख्यान दिए ।
6. भारतीय रिज़र्व बैंक की बैंकिंग शब्दावली पर स्थायी समिति के सदस्य
7. मंगलूर विश्वविद्यालय के मानव संसाधन के बीएचआरडी उपाधि हेतु करिक्यूलम निर्धारण समिति के सदस्य
8. आकाशवाणी मंगलूर और गोवा से अनेक प्रसारण

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	निवेदन	
1.	पूर्व पीठिका - अर्थ जगत एवं भाषा	1 - 2
2.	हिंदी तथा बैंकिंग एवं आर्थिक परिदृश्य	3 - 6
3.	हिंदी में बैंकिंग का साहित्य	7 - 15
4.	भावी बैंकिंग एवं भाषा	16 - 22
5.	हिंदी का मानकीकरण	23 - 27
6.	हिंदी माध्यम से बैंकिंग प्रशिक्षण	28 - 36
7.	व्यावसायिक हिंदी की विश्वात्मक भूमिका	37 - 40
8.	भारतीय संस्कृति	41 - 46
9.	राजभाषा नीति के अनुपालन की स्थिति और नए आयाम	47 - 52
10.	राजभाषा प्रबंध	53 - 55
11.	20वीं सदी की उपलब्धियाँ - राष्ट्रभाषा हिंदी के संदर्भ में	56 - 60
12.	विश्व के भाषाओं में हिंदी का स्थान	61 - 67
13.	हिंदी अन्तराष्ट्रीय भाषा है	68 - 75
14.	विश्व में हिंदी अध्ययन केंद्र	76 - 83
15.	शब्द संसार	84 - 87
16.	बैंकों का इतिहास	88 - 90
17.	कार्य संस्कृति में सुधार	91 - 93

18.	इंटरनेट	94 - 95
19.	ई-मेल	96 - 97
20.	उपभोक्ता संरक्षण	98 - 99
21.	खगोलीकरण व उच्च शिक्षा	100 - 101
22.	भारत की अर्थव्यवस्था	102 - 104
23.	विश्व व्यापार संगठन	105 - 106
24.	मूल्यवर्धित कर	107 - 109
25.	एटीएम कार्ड	110 - 112
26.	आत्म विकास	113 - 116
27.	पहल प्रवृत्ति	117 - 119
28.	ग्राहक सेवा	120 - 124
29.	बैंक और कानून	125 - 127
30.	बदलती बैंकिंग व्यवस्था और मानव संसाधन	128 - 130
31.	21वीं शती में बैंकिंग परिदृश्य	131 - 138
32.	वित्त जगत के महत्वपूर्ण संगठन	139 - 145
33.	अर्थ जगत और घोटाले	146 - 152
34.	बैंक ऋणों की वसूली	153 - 160
35.	मानव संसाधन विकास	161 - 167
36.	वित्तीय उदारीकरण एवं आर्थिक विकास	168 - 174

पूर्व पीठिका-अर्थजगत एवं भाषा

भूमंडलीकरण से उत्पन्न वातावरण में बैंकिंग एवं आर्थिक परिदृश्य पूरी तरह से बदल गया है । उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण की त्रयी ने विश्व बाजार में उथल-पुथल मचा दी है । आज विश्व भर में कई अर्थ व्यवस्थाएं चरमरा कर ढह गई हैं, कई हिचकोले खा रही हैं और कई भूमंडलीकरण से उत्पन्न चुनौतियाँ का सामना करते हुए निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हैं ।

ऐसे बदलते परिदृश्य में भारतीय अर्थ व्यवस्था अपनी सफलता की यात्रा पर निरंतर अग्रसर है । वर्तमान सरकार की आर्थिक नीतियों के सुपरिणाम सामने आने लगे हैं, हमारा विदेशी मुद्रा भण्डार 100 अरब डालर से काफी आगे पहुँच गया है । सकल घरेलू उत्पाद 8.5% की दर से बढ कर निरन्तर प्रगति मुखी हो गया है । गत वर्षों से काफी लम्बी नींद त्याग कर स्टॉक मार्केट फिर बड़ी तेजी से आगे बढ रहा है । उद्योग, व्यापार और बैंक लाभ कमा रहे हैं । इन सब के परिणाम से एक सुखद वातावरण बना है जिसे "फीलगुड फैक्टर" का नाम दिया जा रहा है ।

इस नए महौल में बैंकिंग एवं अर्थ जगत में कई नई संकल्पनाओं ने जन्म लिया है । कुछ नए चिंतन उभर कर सामने आए हैं । बैंकिंग एवं वित्त जगत के इन परिवर्तनों से आर्थिक जगत में रुचि रखने वाले पाठकों, बैंकरों तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों को जानकारी उपलब्ध कराना आवश्यक हो गया है ।

अर्थ जगत, व्यापार और बैंकिंग तंत्र भाषा से सीधे ही जुड़े हैं । इन आर्थिक क्षेत्रों में जहाँ सरकारी नियंत्रण है वहाँ हिंदी राजभाषा के रूप में लागू होती है तथा जो निजी क्षेत्र में हैं उनमें हिंदी एक सम्पर्क भाषा व व्यापार तथा व्यवहार की भाषा के रूप में उपयोग में लाई जाती है । दोनों ही क्षेत्रों में भारत में अर्थजगत और हिंदी का **'शरीर और आत्मा'** जैसा संबंध है । भाषा सदैव बाजार से विकसित होती है । आज भारत को विश्व में सबसे बड़े व्यापारिक केंद्र के रूप में देखा जा रहा है । भारत विश्व का सबसे बड़ा बाज़ार बनने जा रहा है । अतः इस आर्थिक परिदृश्य में भारत की राजभाषा